पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता – मॉड्यूल चार – उसने हमें भविष्यद्वक्ता दिए – भाग 4

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. स्पष्ट करें कि परमेश्वर के राज्य के लिए यूहन्ना बपतिस्मादाता की आशा उसके दिनों में आम बात क्यों थी?
3. यह आपको कैसा महसूस कराता है कि परमेश्वर के प्रति आपके निर्णय और प्रतिक्रियाएँ इतिहास की दिशा को प्रभावित करती हैं?
4. किस प्रकार “क्या जाने?” स्वभाव आपके प्रार्थना के जीवन को बदल सकता है?
5. यह अध्ययन दर्शाता है कि भविष्यद्वक्ता अपने श्रोताओं को भविष्य को बनाने के लिए सक्रिय करना चाहते थे। यह किस प्रकार मसीहियों द्वारा पुराने नियम की पुस्तकों के इस्तेमाल करने के तरीके को प्रभावित करना चाहिए?
6. आपको इस विचार से कैसा अनुभव होता है कि भविष्यवाणी मूलभूत रूप से सशर्त होती है? क्या यह आपको पुनः आश्वस्त करता है? क्या यह आपको डराता है?
7. आधुनिक कलीसिया का व्यवहार किस प्रकार भविष्य में राज्य के आगमन को प्रभावित कर सकता है?
8. क्या हुआ होता यदि पुराने नियम में परमेश्वर के लोग निर्वासन से पूर्व के दिनों में, निर्वासन के दिनों में और निर्वासन के बाद पुनर्स्थापना में विश्वासयोग्य रहे होते?
9. विश्वासयोग्य इस्राएली जानते थे कि परमेश्वर की आशीषें उसकी दया, अनुग्रह और क्षमा पर निर्भर थीं, न कि मानवीय योग्यता पर। किन रूपों में आधुनिक मसीही परमेश्वर की आशीषों को गलत रीति से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं? यह किस प्रकार परमेश्वर के साथ उनके संबंध को प्रभावित कर सकता है? परमेश्वर की दया, अनुग्रह और क्षमा पर निर्भर रहने के लिए वे कौनसे व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं?
10. यह जानकार आपको कैसा महसूस होता है कि यीशु पुराने नियम की पुनर्स्थापना की सभी प्रतिज्ञाओं को पूरी तरह से पूर्ण करेगा?
11. परमेश्वर के अपरिवर्तनीय होने के बारे में आपका ज्ञान किस प्रकार मुश्किल समयों में आपको बनाए रख सकता है?

**समीक्षा कथन :** भविष्यद्वक्ता जानते थे कि परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचाई संबंध के कुछ निश्चित आदर्श थे, और कि इनका प्रभाव उनकी सेवकाई पर पड़ा। इन आदर्शों में परमेश्वर की परोपकारिता, और उस परोपकारिता के आधार पर परमेश्वर के लोगों से अपेक्षित विश्वासयोग्यता शामिल थी। ये बातें सारी वाचाओं में प्रकट होती हैं।

**विषय का अध्ययन :** एलन हमेशा चिंतित रहती थी कि उसका पति उससे प्रेम नहीं करता। परिणामस्वरूप, वह हमेशा अपने शब्दों और कार्यों के प्रति बहुत सावधान रहती थी क्योंकि उसे डर रहता था कि यदि उसने कोई गलती की या उसे नाराज़ किया तो वह उससे प्रेम करना बंद कर देगा। उसे हमेशा डर रहता था कि उसे प्रेम नहीं मिलेगा। उसके पति को उसका यह व्यवहार पसंद था और वह इसे बढ़ाता था, क्योंकि जब तक वह डर में रहेगी, वह हमेशा अपनी बात मनवा सकता था।

मनन के प्रश्न :

1. अपने कलीसियाई समुदाय में किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लें और उनसे पूछें कि परमेश्वर के साथ आदर्श संबंध क्या होता है। उत्तर पर ध्यान दें और इसकी तुलना इस अध्याय में दिए गए वाचाई आदर्शों से करें।
2. इस अध्याय ने परमेश्‍वर के साथ आदर्श संबंध के बारे में आपके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित किया?
3. अपने सीखनेवाले समुदाय के साथ उपरोक्त विषय के अध्ययन का मूल्यांकन करें। क्या हम, जो परमेश्‍वर के लोग हैं, उससे *इसलिए* प्रेम करते हैं कि वह हमसे प्रेम करे या *इसलिए कि* वह पहले से ही हमसे प्रेम करता है? 1 यूहन्ना 4:19 पर ध्यान दें।
4. क्या आपके जीवनसाथी को डर बना रहता है कि कहीं वह आपको नाराज़ न कर दे? क्या आपको डर बना रहता है कि कहीं आप अपने जीवनसाथी को नाराज़ न कर दें? यदि इनमें से कोई भी बात है, तो आपको कैसा लगता है?
5. क्या आपके बच्चे आपके डर में जीवन जीते हैं? यदि हाँ, तो आपको कैसा लगता है?
6. जब आप परमेश्वर के बारे में सोचते हैं, तो क्या आपको ऐसा लगता है कि वह क्रोधित और कठोर है और ऐसे व्यवहार करता है जैसे कि वह आपसे क्रोधित हो? या क्या आपको लगता है कि वह आपके लिए मारे जानेवाले यीशु के कारण आप पर मुस्कुरा रहा है? इन प्रश्नों का उत्तर पवित्रशास्त्र के अपने ज्ञान के आधार पर नहीं बल्कि अपनी भावनाओं और कार्यों के आधार पर दीजिए। अपने सीखने वाले समुदाय में इस पर चर्चा करें।
7. एक ओर प्रभु के प्रेम को पाने या उसे न खोने का प्रयास करते हुए उसके डर में जीवन जीने और दूसरी ओर नीतिवचन 9:10 में बताए गए प्रभु के भय में जीवन जीने के बीच के अन्तर का वर्णन आप कैसे करेंगे?

दिए जानेवाले कार्य

* अपने कलीसियाई समुदाय में किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लें और उनसे पूछें कि परमेश्वर के साथ आदर्श संबंध क्या होता है। उत्तर पर ध्यान दें और इसकी तुलना इस अध्याय में दिए गए वाचाई आदर्शों से करें।